International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 50-51

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(2): 50-51
www.allresearchjournal.com
Received: 13-12-2014
Accepted: 15-01-2015

नन्दिनी समाधिया
पी0एच0डी0 (संस्कृत)
1054 खजूर बाग नई बस्ती झाँसी।

Correspondence:
नन्दिनी समाधिया
पी0एच0डी0 (संस्कृत)
1054 खजूर बाग नई बस्ती झाँसी।

आचार्य मनु के अनुसार मनुस्मृति में सामाजिकता का समन्वय

नन्दिनी समाधिया

मनुस्मृति एवं सामाजिकता का समन्वय :–

मनु के अनुसार धर्म मानव को कर्तव्य का निर्णय कराने के लिए है। [1] मानवधर्म वर्णाश्रम–व्यवस्था के अनुसार है। मनु ने वर्णाश्रम धर्म के अतिरिक्त देषधर्म, कुल–धर्म, पाषण्ड–धर्म और गण–धर्म की योजना प्रस्तुत की है। [2] इन सभी धर्मों के व्याख्यान द्वारा मनु ने सामाजिक और कौटुम्बिक संष्लिष्टता का नियोजन किया है। मनु के अनुसार वृद्धों की सेवा करने वाले अभिवादनषील व्यक्तियों की आयु, विद्या, यष और बल बढ़ते हैं। मनुस्मृति में अभिवादन, प्रत्यभिवादन, कुषल क्षेम–प्रष्न, छोटे–बड़ों के संबोधन, अन्य वर्णों के लोगों को बड़ा–छोटा मानने का मानदण्ड और दूसरों को मार्ग देने के नियम मिलते हैं। [3]

मनु ने समाज में छोटे–बड़े की व्यवस्था देते हुए कहा कि धन, बन्धु, अवस्था, कर्म और विद्या उत्तरोत्तर बढ़ कर मान्यता के प्रतीक हैं। यदि समाज में रहते हुए किसी ने अवमानना कर दी तो मनु की दृष्टि में सुख से सोने का समय आ गया। 'अपमानित पुरुष सुख से सोता है, सुख से जागता है, और सुखपूर्वक विचरण करता है, पर अपमान करने वाला नष्ट हो जाता है। [4]

मनु की योजना के अनुसार प्यासे को पानी देने वाला तृप्त होता है, भूखे को भोजन देने वाला अक्षय सुख प्राप्त करता है औद दीपदान करने वाले को उत्तम नेत्र मिलते हैं। [5] ऐसी व्यवस्था को देखने से यही परिणाम निकलता

कौटुम्बिक संष्लिष्टता :–

मनु ने आदेष दिया है कि कुटुम्ब में बड़े और छोटे किसी की अवमानना नहीं करनी चाहिए। [6] अपने कुटुम्ब के लोगों, संबंधियों और दास–वर्ग से विवाद नहीं करना चाहिए। इनसे विवाद न करने वाला सभी पापों से छूट जाता है। [7] मनु ने माता–पिता और आचार्य का प्रिय और सेवा करने का विधान बना कर कहा–ये तीनों लोक हैं, अक्षय हैं, वेद हैं और अगिन हैं। इन तीनों की सावधानी से पूजा करने पर गृहस्थ तीनों लोकों को जीत लेता है। अपने शरीर से दीप्यमान होकर वह देवताओं की भाँति सुख पाता हैं माता की भक्ति से मानव–लोक, पिता की भक्ति से मध्यम लोक और गुरु की सेवा से ब्रह्मलोक भोगने का अवसर प्राप्त होता है। इन्हीं तीनों से संबद्ध परम धर्म है, शेष उपधर्म हैं। [8]

कुलस्त्री और कन्याओं को सर्वथा सन्तुष्ट रखने की योजना प्रस्तुत करते हुए मनु ने कहा है–कन्या को न बेचना, कन्या की पूजा करना, उसको आभूषित करना आदि धर्म की दृष्टि से अभ्युदय के कारण हैं। जहाँ स्त्रियाँ पूजित नहीं होतीं, वहाँ देवता नहीं रमण करते और वहाँ सभी धार्मिक क्रियाएँ निष्फल होती हैं। जिस कुल में वधू और कन्याएँ शोक करती हैं, उसका नाष हो जाता है। स्त्रियों के प्रसन्न होने से सारा कुल प्रकाषित होता है। [9]

व्यक्तित्व के विकास के लिए सभी प्रकार के लोगों से षिक्षा ग्रहण करना मनु ने समीचीन माना है। 'षुभ विद्या नीच से ले लेना, चाण्डाल से भी सर्वोत्तम धर्म की षिक्षा लेना, बालक से भी सुभाषित ग्रहण करना, और शत्रु से भी सदाचार सीख लेना उचित है। विष से भी अमृत मिले तो उसे क्यों न ग्रहण किया जाय ? [10]

यज्ञ–विधान :–

मनु ने देव–यज्ञ के अवसर पर अग्नि, सोम, विष्वेदेव, धन्वन्तरि, कुहू (द्वितीया की अधिष्ठात्री देवी), अनुमति (षुक्ल चतुर्दषी तथा पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी) और द्यावा–पृथ्वी के लिए गृह्य अग्नि में हवन करने का उल्लेख किया है। मनु–युग में इन्द्र, यम, वरूण ओर सोम को उनके अनुयायियों सहित बलि दी जाती थी। मरुत् के लिए द्वार पर, आपस् के लिए जल में और वनस्पति के लिए मुसल और ओखल में बलि दी जाती थी। घर के उत्तर–पूर्व में लक्ष्मी के लिए, दक्षिण–पष्चिम में भद्रकाली के लिए तथा घर के मध्य भाग में ब्रह्मा और वास्तुपति के लिए बलि दी जाती थी। विष्वेदेवों के लिए बलि आकाष में फेंक दी जाती थी। मनु की बलि–वैष्वदेव की योजना में मानव के द्वारा सभी दृष्य और अदृष्य कोटि के चराचरों, कुत्तों, चींटियों, पतितों, पापियों और चाण्डालों तक के भरण–पोषण का ध्यान रखा गया है। [11]

नरक और स्वर्ग :–

मनुस्मृति से नरक की तत्कालीन कल्पना का परिचय मिलता है। मनु के अनुसार 21 नरकों का द्वारा राजा का दान लेने वालों के लिए खुला है। इनमें से प्रमुख तामिस्र, अन्धतामिस्र, महारौरव, महावीचि, सम्प्रतापन, लोहषंकु, असिपत्र–वन आदि हैं। विविध दानों के द्वारा उत्तम व्यक्तित्व की ओर मरणोत्तर काल में मनोरम लोकों की प्राप्ति की योजना प्रस्तुत की गयी है।

व्यावहारिक सौष्ठव :–

व्यावहारिक जीवन में मानव की कर्मण्य प्रवृत्तियों को प्रषस्त दिषा में संचारित करने के लिए मनु ने उपयोगी नियम बनाये हैं, जिनके अनुसार ब्राह्ममुहूर्त में उठना चाहिए, सन्ध्या करनी चाहिए, अनध्याय के समय या अपवित्र स्थान में अध्ययन नहीं करना चाहिए, धन को दुर्लभ न मान कर आमरण उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि इस प्रयास में कहीं असफलता मिले तो अपना तिरस्कार करने की कोई आवष्यकता नहीं।

मनु ने आदेष दिया है कि असमय में अपरिचित व्यक्ति के साथ न चले, पवित्र स्थानों के समीप गन्दगी न फैलाये, सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय सत्य न बोले, असत्य प्रिय होने पर भी न बोले, तथा शुष्क वैर और विवाद न करे, किसी अंगहीन, दौषी, कुरूप या बहिष्कृत व्यक्ति पर आक्षेप न करे। द्वेष, दम्भ, मान, क्रोध और क्रूरता को छोड़ दे। हाथ, पैर, नेत्र तथा वाणी को चपल न बनाये और न दूसरों की हानि करने की चेष्टा करे। अपने कुल की पद्धति पर चले, छोटे लोग तिरस्कार भी कर दें तो चुपचाप सह ले और सज्जनों के बीच अपना ठीक परिचय दे। [12]

स्वतन्त्रता से प्रेम :–

धार्मिक दृष्टि से मनु स्वतन्त्रता के परम पुजारी थे। उनका स्पष्ट मत है कि जो कोई काम परवष हो, उसे यत्नपूर्वक छोड़ देना चाहिए और जो काम अपने वष में हो, उसे ही करना चाहिए। सब कुछ परवष दुःख है, अपने वष में सब कुछ सुख है। यही सुख–दुःख का संक्षेप में लक्षण है। वही काम करना चाहिए, जिससे अन्तरात्मा का परितोष हो। इसके विपरीत कामों को नहीं करना चाहिए। [13]

1. मनु0 1.126
2. मनु0 1.118
3. मनु0 2.122–138
4. मनु0 2.163
5. मनु0 4.229
6. मनु0 2.225–227
7. मनु0 4.180–181
8. मनु0 2.225–237
9. मनु0 3.51–62
10. मनु0 2.238–241
11. मनु0 3.84–92
12. मनु0 4.92–152,174,183–191, 218 और 255
13. मनु0 4.159–161